❀ श्रीमत् सुखसागर सद्गुरुभ्योनमः ❀

फलोदी-मारवाड़ के लिये वे दिन बड़े सौभाग्य के थे कि-जिन दिनों में पूज्यपाद प्रकाण्ड विद्वान शान्तमूर्ति श्रीमज्जैनाचार्य श्री जिन हरिसागर सूरीश्वरजी महाराज साहब की अध्यक्षता में "श्री सुखसागर समुदाय सम्मेलन" का अधिवेशन हुआ।

यद्यपि यह सम्मेलन खासकर त्यागी महात्माओं की आत्मोन्नति के उद्देश्य को लेकर ही हुआ था फिर भी बंद घरवाड़ों में न होकर धर्मशाला के विशाल हॉल में चतुर्विध संघ के समक्ष हुआ।

इस सम्मेलन को सफल बनाने में खासकर श्रीखरतर गच्छाधिपति चारित्र चूड़ामणी पूज्येश्वर श्रीमत् सुखसागरजी महाराज साहब के समुदाय के उपस्थित साधु-साध्वियोंजी ने सम्मिलित होकर पूर्ण सहयोग दिया एवं अनुपस्थित व्यक्तियों ने अपनी सहयोगी सहानुभूति भेजी; तथा स्थानिक खरतर गच्छ संघ ने सम्मेलन की आयोजना की।

सम्मेलन के अधिवेशन शुभ मिती जेष्ठ शुक्ल ५-६ = १९९७ तदनुसार ताः १०-११ जून १९४० को हुए; जिसका क्रमशः विवरण इस प्रकार है:—

❀ पहिला दिन ❀

प्रातःकाल में पूज्यपाद समुदाय नायक श्री सुखसागरजी महाराज साहब को श्रद्धाञ्जली देने के लिये एक जुलूस निकला, जिसमें चतुर्विध संघ उत्कर्ष भावना से सम्मिलित हुआ था। देवाधिदेव श्री गोड़ी पार्श्वनाथ स्वामी के दर्शन कर जगत्-पूज्य युग प्रधान दादा साहब श्री जिन दत्तसूरीश्वरजी के दर्शन किये; पश्चात् दादावाड़ी के विशाल कमरे में स्थापित परम गुरुदेव श्री सुखसागरजी महाराज साहब की फोटो के सामने श्रद्धाञ्जली दी गई-प्रारम्भ में श्राचार्य महाराज श्री जिन हरिसागर सूरीश्वरजी ने श्रद्धाञ्जली देते हुए यह फरमाया कि—उस पवित्र आत्मा को अपने को आशीर्वादपूर्ण-अन्तर सहायता है; इस तरह विश्वास प्रकट किया, बाद में पूज्यवर प्रखरवक्ता शास्त्र विशारद सिद्धांतवेदी श्रीमान् वीरपुत्र श्री आनन्दसागरजी महाराज साहब ने स्वरचित एक संस्कृत अष्टक द्वारा श्रद्धाञ्जली अर्पण की; तदन्तर कविवर श्री कवीन्द्रसागरजी महाराज ने अपने बनाये हुए काव्य द्वारा स्वर्गस्थ आत्मा को श्रद्धाञ्जली दी, इसके पश्चात् संघ ने अक्षतादि से वधाये। वहां से चिन्तामणि पार्श्वनाथजी के दर्शन कर बड़ी धर्मशाला में जुलूस समाप्त हुआ।

दोपहर को ठीक १॥ बजे आचार्य महाराज की अध्यक्षता में सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ हुआ। कार्य आरंभ होने के पहिले हॉल खचाखच भर गया उपस्थित लगभग १५०० के थी। मंगलाचरण और स्वागत गीत के बाद सबसे पहिले उत्साही श्रीयुत रतनचंदजी गोलेच्छा ने

नाना स्थानों से प्राप्त सहानुभूति के तार व पत्र सुनाये; बाद में कविवर श्री कवीन्द्रसागरजी महाराज ने सम्मेलन भरने का कारण व उसका उद्देश्य जनता को बताया; पश्चात् सिद्धांतवेदी पूज्येश्वर प्रखरवक्ता वीरपुत्र श्री आनन्दसागरजी महाराज साहब ने सर्व सम्मति से बने हुए २७ नियमों में से अखण्ड अंक स्वरूप ६ नियम व्याख्या पूर्ण करीब सवा घण्टे में सुनाये, आप के कहने की शैली तो सहज ही प्रभाव शालिनी है, इसके बाद मुनि श्री कान्तिसागरजी महाराज और मुनि श्री उदयसागरजी महाराज साहब ने नियमों पर विश्वास प्रकट करते हुए उनकी पुष्टि की; तब जय घोष के साथ सभा विसर्जन हुई।

❀ दूसरा दिन ❀

प्रातःकाल में सिर्फ आर्याओं के भाषण का कार्यक्रम रक्खा गया था ८॥ बजे से १०॥ बजे तक श्रीमती प्रेमश्रीजी, वल्लभश्रीजी, राजेन्द्रश्रीजी, चन्द्रश्रीजी, हीराश्रीजी, अनुभवश्रीजी, जिनश्रीजी, और प्रवीणश्रीजी, महाराज ने भाषण दिये; इन विदुषी आर्याओं ने चारित्र की पुष्टी करते हुए गुरु आज्ञा पालन करने पर जोर दिया; और नियमों का समर्थन करते हुए उनके पालन की दृढ़ता व्यक्त की।

दोपहर को ठीक दो बजे अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। मंगलाचरण के पश्चात मुनि श्री करुणासागरजी महाराज ने विद्या के विषय में भाषण दिया, बाद पूज्यपाद प्रखरवक्ता वीरपुत्र श्री

आनंदसागरजी महराज ने शेष ११ नियम सविस्तार पाण्डित्य-पूर्ण ढंग से सुनाये, इसके बाद अध्यक्ष महोदय ने अपनी जिम्मे-धारी निभाने की प्रार्थना की और साधु महात्माओं से अपने कर्त्तव्यों पर सुदृढ़ रहकर नियम पालन करने के लिये निवेदन किया; आर्या मण्डल को दृढ़ता पूर्वक नियम पालने का अनु-रोध किया; पश्चात् श्रावक संघ को सूचना की कि—आप भी मित्रतापूर्ण भाव से हमारे सहायक बने। तब पंडित प्रवर श्रीमान् मणिसागरजी महाराज साहब ने भी फरमाया कि नियमों के पालने ही में हमारी उन्नति है।

तदन्तर अंतिम प्रेसीडेन्सियल स्पीच (प्रमुख का भाषण) आचार्य महाराज साहब का हुआ—आपने सहायक मुनिजन और आर्याओं को धन्यवाद देकर नियमों की विशिष्टता समझाई और अपने कर्त्तव्यों को सुचारु रूप से पालने की आश्वासन रूप इच्छा प्रकट की और समुदाय स्थित साधु-साध्वियों को परस्पर प्रेम भाव से रहने का संदेश दिया; अन्त में सम्मेलन की कार्य-वाही समाप्त होने की घोषणा की गई। महावीर स्वामी, गुरुदेव दादा साहब और परोपकारी पूज्यवर श्रीमत् सुखसागरजी महाराज साहब के जय घोष के साथ सभा विसर्जन की गई। पांच बजे अधिवेशन सम्पूर्ण हुआ।

सम्मेलन का कार्य समाप्त होने पर भी स्थानिक और बाहर से पधारे हुए सज्जनों को बोलने का अवसर मिल सके इसलिए तीसरे दिन एक सभा की आयोजना की गईः—

❀ तीसरा दिन ❀

दोपहर को ठीक ढाई बजे आचार्य महोदय की अध्यक्षता में सभा का कार्य प्रारम्भ हुआ। मंगलाचरण के पश्चात् श्रीयुत गुलाबचंदजी गोलेच्छा ने अपना भाषण देते हुए पू० पं० प्र० श्रीमान् मणिसागरजी महाराज साहब को धन्यवाद दिया कि आपने सम्मेलन के लिये भरसक प्रयास किया। बाद में श्रीयुत हीराचन्दजी गोलेच्छा, श्रीयुत सिरेमलजी संचेती जयपुर, श्रीयुत बागमलजी गोलेच्छा लश्कर, श्रीयुत बैरागी प्रेमचन्दजी चौधरी, श्रीयुत वल्लभचंद जी भणसाली जोधपुर, श्रीयुत पारसमलजी गोलेच्छा, (चम्पालालजी का लिखित संदेश) श्रीयुत फूलचन्द जी श्रावक, श्रीयुत रतनचन्द जी गोलेच्छा, श्रीयुत सोनराजजी गोलेच्छा, श्रीयुत चान्दमल जी गोलेच्छादि ने सम्मेलन के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए समर्थन किया और समयोचित भाषण दिये; तब मुनि श्री कान्तिसागरजी म० ने गुरुपद की महिमा जनता को समझाई, पं० प्र० श्री मणिसागरजी महाराज साहब ने समुदाय की ओर से आचार्य श्री का उपकार माना और उनके सतत परिश्रम के प्रति कृतज्ञता प्रकट की; बाद में कवीश्वर श्री कवीन्द्रसागरजी महाराज ने सम्मेलन के कार्यवाही की पूर्णतया पुष्टी की और पूज्य वीरपुत्र श्री आनन्दसागरजी महाराज साहब को धन्यवाद देते हुए कहा कि—आपने इस सम्मेलन के लिये ५०० मील का विहार कर कठिन परिश्रम उठाया। पश्चात् भगवान् महावीर स्वामी की, गौतम गणधर की, जगत्पूज्य दादा साहब की, परम पूज्य श्रीमत् सुखसागर जी महाराज की, आचार्य महाराज श्री जिन हरिसागर सूरीश्वरजी की; पं० प्र०

मणिसागरजी महाराज की और प्रखर वक्ता वीरपुत्र श्रीआनन्द-सागरजी महाराज की जय बोलने की झड़ी लगादी, जय घोस से यह विशाल हॉल गूंज उठा था और जनता का हृदय हर्ष से उछल रहा था।

अंत में उत्साही युवक श्रीयुत तिलोकचंदजी गोलेच्छा ने विभिन्न प्रांतों से पधारे हुए सज्जनों तथा बहिनों को धन्यवाद देते हुए यह बताया कि—श्रीयुत रतनचन्दजी गोलेच्छा ने इस सम्मेलन को सफल बनाने में सराहनीय प्रयत्न किया है। श्रीयुत जोगराजजी गोलेच्छा और श्रीयुत नथमलजी कोठारी ने भी अच्छा परिश्रम उठाया। श्रीयुत फूलचन्दजी झावक व श्रीयुत सोभागमलजी गोलेच्छा ने भी काफी सहायता की है अतएव आप सब महानुभावों को खरतर गच्छ संघ की तरफ से मैं धन्यवाद देता हूँ।

इस अवसर पर जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, लोहावट, खीचन, तिवरी, गढ़सिवाणा आदि के बहुत से श्रावक तथा श्राविकाएँ इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए सम्मेलन का तमाम खर्च श्रीयुत् रतनचन्दजी गोलेच्छा, श्रीयुत् हीराचन्दजी तिलोकचन्दजी गोलेच्छा, और श्रीयुत किसनलालजी सम्पतलालजी लूणावत की तरफ से हुआ।

संघ का सेवक—
रतनचन्द गोलेच्छा।

जो नियम खुले अधिवेशन में सुनाये गये थे वे इस प्रकार हैः—

ॐ नमः

श्री खरतर गच्छाधिपति परम पूज्य श्री श्री श्री १००८ श्री श्रीमत् सुखसागरजी महाराज साहब की समुदाय के वर्तमान गणनायक पूज्यवर श्रीमज्जिन हरिसागर सूरिश्वजी महाराजकी अध्यक्षता में समुदाय के हित के लिये फलोदी मारवाड़ में उपस्थित ६७ सत्तानवे साधु-साध्वियों की सर्व सम्मति से निर्माण की हुई नियमावली-समुदाय में लगभग १६० साधु-साध्वियाँ हैं; किंतु बहुतसी साध्वियाँ दूर होने के कारण सम्मिलित नहीं हो सकीं, किंतु अपनी अपनी सहयोग की सम्मति अग्रगण्या द्वारा पहुंचा सकीं हैं।

नियमावली

(१) समुदायस्थित साधु-साध्वियों को परस्पर विरोधात्मक प्रचार न करते हुए निःस्वार्थ भाव से एक दूसरे के प्रति सद्भावना रखनी चाहिए एवम् सहयोगियों के किये हुए शासन कार्यो का समर्थन करते हुए समुदायकी-गच्छकी और जिन शासन की शोभा बढ़ाना चाहिये-विरोधकी सम्भावना होने पर पत्र व्यवहारादि से समाधान कर लेना चाहिये।

(२) प्रत्येक साधु-साध्वी को २०० श्लोक प्रमाण स्वाध्याय अथवा नवकार मन्त्र की दो मालाओं का जाप निरन्तर करना चाहिये-स्वाध्याय समय आधा घंटा से कम न हो।

(३) बाल (१२॥ वर्ष तक) वृद्ध (६० वर्ष से ऊपर) और ग्लान (बीमार) के अतिरिक्त विहारादि खास कारणों के विना प्रत्येक मास में एक उपवास या दो आयंबिल या तीन निविगय अथवा चार एकासन का तप करना चाहिये, यह तप पाक्षिक दिन के तप के सिवाय-अतिरिक्त करना होगा-महिने में तीन उपवास करते हों उनके लिये यह नियम लागू न होगा प्रति दिन एक विगय भी अवश्य छोड़ना चाहिये।

(४) विशिष्ट कारण के विना साधु को मास कल्प और साध्वी को द्विमास कल्प अवश्य बदल लेना चाहिये।

(५) रोगादि, (पढ़ने के लिये, सेवा के लिये, शासन के महत्व कार्यादि के लिये) खास कारणों के बिना विहार करने योग्य हालत में चौमासा पर चौमासा एक क्षेत्र में नहीं करना चाहिये।

(६) खास सबब के बिना सशक (नैरोग्य-व्याख्यान योग्य) साधु-साध्वियों को गणनायकजी की आज्ञा बिना शामिल चौमासा नहीं करना चाहिये।

(७) स्थानापन्न (ठाणापति) संघाड़े को छोड़कर जिस क्षेत्र में चातुर्मास के लिये कोई संघाड़ा रहा हो अथवा रहने का निश्चय हो चुका हो उस क्षेत्र में दूसरे संघाड़े को किसी खास कारण विना चातुर्मास नहीं रहना चाहिये।

(८) अरुणोदय के पहिले विहार नहीं करना चाहिये

(९) साधु-साध्वियों को परस्पर में कोई भी वस्तु का आदान प्रदान करना हो तो अग्रगण्यों की आज्ञा प्राप्त कर उन-

को दिखाकर करना चाहिये ।

(१०) दीक्षेच्छु वैरागी-वैरागण को कुछ (टाइम) समयतक पास में रखकर उनकी संयम की योग्यता देखकर दीक्षा देनी चाहिये ।

(११) साधु-साध्वीकी बड़ी दीक्षा-योगोद्वहन गणनायकजी के उस स्थानपर रहते हुए उन्हीं से कराना चाहिये, एवं १०० मील दूर तक भी उनसे ही कराना चाहिये, इससे अधिक दूर रहने पर उनकी आज्ञा प्राप्त कर चारित्र स्थविर (२० वर्षकी पर्याय वाले) के पास से करा लेना चाहिये ।

(१२) अग्रगण्य साधु-साध्वी को चातुर्मास-लघु-दीक्षा-प्रतिष्ठा-उद्यापनादि महत्कार्यों के करने कराने के पहिले गणनायकजी की आज्ञा प्राप्त कर लेनी चाहिये साध्वीजी को प्रवर्तिनीजी की भी आज्ञा लेनी चाहिये ।

(१३) यदि कोई गणका विरोध करे और उसका प्रतिवाद करने पर मामला बढ़ने की सूरत में हो तो गणनायकजी की आज्ञा प्राप्त कर लेना चाहिये ।

(१४) साधु-साध्वियों के उपदेश से होने वाली शिष्य दीक्षा गच्छान्तरीय साधु-साध्वी से गणनायकजी की आज्ञा बिना नहीं कराना चाहिये ।

(१५) पण्डित के पास पढ़ते समय साध्वी को अकेला नहीं बैठना चाहिये, अर्थात् वृद्ध साध्वी या श्राविका को साथ रखकर ही पढ़ना चाहिये ।

(१६) अपने अपने अग्रगण्य साधु-साध्वियों की आज्ञा प्राप्त कर एवम् उनके दस्तखत कराकर परिस्थिति के अनुकूल पत्र व्यवहार करना चाहिये और तमाम पत्र उन्हीं के नाम पर आवें ऐसी योजना करनी चाहिये।

(१७) बाल-वृद्ध-ग्लान और अशक्तादि विशेष अवस्थाओं को छोड़कर साधु-साध्वियों के परस्पर आहार पानी का सम्बन्ध नहीं रहना चाहिये।

(१८) अग्रगण्य साधु-साध्वियों के शिष्य-शिष्याएं किसी कारणवश उनके पास से निकल जावें और अपने समुदाय के अन्य अग्रगण्य के पास जावें तो उनको रहने का स्थान दिया जा सकता है; परन्तु जब तक उनके अग्रगण्य की सम्मति न मिल जाय तब तक उनके साथ आहार-पानी, वन्दनादि सामुदायिक समस्त व्यवहार नहीं करना चाहिये। निकले हुए साधु-साध्वी को रखनेवाला तैयार हो और उसके अग्रगण्य सम्मति न देते हों ऐसी हालत में उसका निर्णय गणनायकजी पर निर्भर होगा निकलने वाले को सूचना रूप प्रार्थना साधुजन गणनायकजी को और साध्वीजन गणनायकजी तथा प्रवर्तिनीजी को भेज दें।

(१९) समुदाय के हित के लिये यथा शक्य ५ वर्ष में योग्य स्थान पर समुदाय सम्मेलन की योजना गणनायकजी करें और इन नियमों में जो कुछ परिवर्तन आवश्यक हो या कोई नये नियम बनाना हों तो उस समय होना चाहिये।

(२०) इन नियमों में से कोई भी नियम का उल्लङ्घन करने पर तीन आयंबिल से लेकर बारह आयंबिल तक यथोचित

प्रायश्चित देने का अधिकार गणनायकजी को रहेगा और किसी भी एक नियम के लिये तीन वार दण्डित हो जाने पर चौथी वार दण्ड के अधिकारी को तीन मास से बारह मास तक अपने से छोटे साधु साध्वियों के वन्दन अधिकार से वंचित किया जायगा; इससे आगे अपराधी के लिये सख्त विचार किया जायगा।

समुदाय के हितैषी—

पं० मणिसागर वीरपुत्र आनन्दसागर

* ॐ शान्तिः *
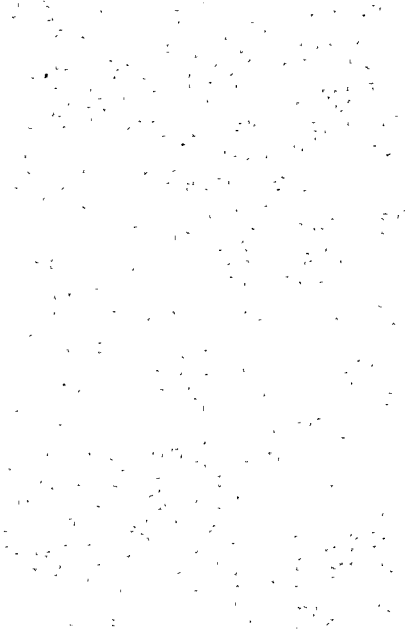
पुस्तक मिलने का पता :—

श्रीयुत सेठ परतापचन्दजी रतनचन्दजी गोलेच्छा,

बैंकर्स

सदर बाजार, जबलपुर. सी. पी.

दी नरबदा प्रिंटिंग वर्क्स, जबलपुर।

जैनग्रन्थालय पुस्तक नं० १५
श्रीवीतरागाय नमः
न-माला नं० १
संग्रहकर्ता—
जी तत्पुत्र भैरोंदानजी तत्पुत्र
ज्ञानपाल सेठिया।
बीकानेर निवासी।
AINPAL SETHIA,

सूचना
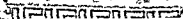
पत्र व्यवहार नीचे लिखे पतेसे करें और अपना ठिकाना (पता) नागरी (हिन्दी) अंग्रेजी दोनों अक्षरोंमें साफ साफ पूरा लिखें, ग्रामका नाम पोस्ट आफिस तथा जिला अंग्रेजीमें साफ हर्फो में लिखें और डाक खर्चके लिये टिकिट पहिले भेजें।

इस पुस्तकमें कोई शब्द काना मात्रा आदि दृष्टि दोषसे अशुद्ध रह गया हो या सूत्रसे विपरीत आगया हो तो सज्जन सुधारकर वांचें और हमें सूचना करें कि आइन्दा शुद्ध छपे।

अगरचन्द भैरोंदान सेठिया,
'जैन ग्रन्थालय'
बीकानेर (राजपूताना)
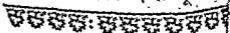
ज्ञान-माला ।

स्वर—

अ आ इ ई

उ ऊ ऋ ॠ

ऌ ॡ ए ऐ

ओ औ अं अः

व्यञ्जन—

क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
य र ल व
श ष स ह
क्ष त्र ज्ञ

स्वरोंकी पहिचान–

अ इ ओ उ ऋ अं ए आ
औ ऊ लृ ऐ अः ई ॡ ॠ

व्यञ्जनोंकी पहिचान–

च ट ड प य ह र ल
ख म थ ढ द ण न ग
ङ श फ ठ क घ ध
ञ त ब व भ ष
स छ झ भ
त्र ज्ञ क्ष

॥ बारहखड़ी ॥

क का कि की कु कू के कै को कौ कं कः

संयुक्त अक्षर—

क्क ह्न ङ्क ङ्ख ङ्घ ञ्च ञ्ज स्व न्त्र
ष्ट ष्ठ ष्ड ष्ढ न्त ह्य ग्न हुं न्न
घ्य ह्म म्प म्फ म्ब म्भ म्म ह्ल ह्व
स्क स्ख द्ग द्ध त्र श्व ष्ट ष्ठ ष्ण
स्त स्थ द्द ब्ध न्ह स्प स्फ द्ब च्य
ह्ल च्च च्ञ ज्ञ द्द ट्ट ड्ड ग्व त्व
कु गु घु चु छु झु यु फु वु
कृ गृ तृ घृ दृ हृ शृ वृ मृ
क्र प्र ग्र ज्र ट्र ष्र ब्र य्र म्र
क्र घ्र ध्र त्र भ्र न्र म्र स्र ह्र
कू भू मू नू रू वू सू तू शू
के गे ते दे से रे ले वे हे
क् ख् ग् ज् फ्

पहाड़ा।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०
३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०
४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०
५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०
६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	६०
७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	६३	७०
८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०
९	१८	२७	३६	४५	५४	६३	७२	८१	९०
१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००

पहाड़ा—

११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
३३	३६	३९	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०
४४	४८	५२	५६	६०	६४	६८	७२	७६	८०
५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००
६६	७२	७८	८४	९०	९६	१०२	१०८	११४	१२०
७७	८४	९१	९८	१०५	११२	११९	१२६	१३३	१४०
८८	९६	१०४	११२	१२०	१२८	१३६	१४४	१५२	१६०
९९	१०८	११७	१२६	१३५	१४४	१५३	१६२	१७१	१८०
११०	१२०	१३०	१४०	१५०	१६०	१७०	१८०	१९०	२००

२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	६०
६३	६६	६९	७२	७५	७८	८१	८४	८७	९०
८४	८८	९२	९६	१००	१०४	१०८	११२	११६	१२०
१०५	११०	११५	१२०	१२५	१३०	१३५	१४०	१४५	१५०
१२६	१३२	१३८	१४४	१५०	१५६	१६२	१६८	१७४	१८०
१४७	१५४	१६१	१६८	१७५	१८२	१८९	१९६	२०३	२१०
१६८	१७६	१८४	१९२	२००	२०८	२१६	२२४	२३२	२४०
१८९	१९८	२०७	२१६	२२५	२३४	२४३	२५२	२६१	२७०
२१०	२२०	२३०	२४०	२५०	२६०	२७०	२८०	२९०	३००

पहाड़ा—

३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
६२	६४	६६	६८	७०	७२	७४	७६	७८	८०
९३	९६	९९	१०२	१०५	१०८	१११	११४	११७	१२०
१२४	१२८	१३२	१३६	१४०	१४४	१४८	१५२	१५६	१६०
१५५	१६०	१६५	१७०	१७५	१८०	१८५	१९०	१९५	२००
१८६	१९२	१९८	२०४	२१०	२१६	२२२	२२८	२३४	२४०
२१७	२२४	२३१	२३८	२४५	२५२	२५९	२६६	२७३	२८०
२४८	२५६	२६४	२७२	२८०	२८८	२९६	३०४	३१२	३२०
२७९	२८८	२९७	३०६	३१५	३२४	३३३	३४२	३५१	३६०
३१०	३२०	३३०	३४०	३५०	३६०	३७०	३८०	३९०	४००

बारह महिनेका नाम—

हिन्दी	अंगरेजी—
१ चैत्र	January 31. days जनवरी
२ वैशाख	February 28 ,, फरवरी
३ ज्येष्ठ	March 31 ,, मार्च
४ आषाढ़	April 30 ,, अपरैल
५ श्रावण	May 31 ,, मई
६ भादवा	June 30 ,, जून
७ आसोज (कंवार)	July 31 ,, जुलाई
८ कार्तिक	August 31 ,, अगस्ट
९ मागशिर (अगहन)	September 30 ,, सेपटम्बर
१० पौष	October 31 ,, अकटोबर
११ माघ	November 30 ,, नवेम्बर
१२ फाल्गुन	December31days डीसमबर

—:※:—

सात वार के नाम—

हिन्दी—	अंगरेजी—
१ रविवार (आदित्यवार)	1 Sunday सन डे
२ सोमवार	2 Monday मन डे
३ मंगलवार (भोमवार)	3 Tuesday ट्यूस डे
४ बुधवार	4 Wednesday वेडनेस डे
५ गुरुवार (बृहस्पतिवार)	5 Thursday थर्स डे
६ शुक्रवार	6 Friday फ्राइ डे
७ शनिवार	7 Saturday सैटर डे

॥ अथ एक डोकरीकी वात ॥

एक दिन राजा भोज और माघ पंडित शहरसे थोड़े दूरपर एक बाग था वहां गये, वहांसे वापीस आते वख्त रास्ता भूल गये। जब राजा भोज कहने लगा कि सुणो माघपंडित? अपने रास्ता भूले है, तब माघ पंडित कहने लगा सुणो पृथ्वीनाथ? एक डोकरी गहुंरो खेत रुखालती है, उसको पूछने ठीक करो। तब दोनों असवार चलकर डोकरीके पास आये। दोनों जणा आयने डोकरीसे राम राम किया। डोकरी कहे आवो भाई राम राम। फिर डोकरी बोली भाई आप कौन हो? बाई हम तो वटाउ हैं। वटाउ तो दो एक सूर्य दूजा चंद्रमा, इसमें से कौन? भाई सच्च बोलो आप कौन? बाई हम तो पाहुणा है। पाहुणा तो दो-एक धन, दूजा जोवन,

इसमेंसे कौन ? भाई सच्च बोलो आप कौन ! वाई हम तो राजा है। राजा तो दो-एक चंद्र राजा, दूजो यमराजा, इसमेंसे कौन ? भाई सच्च बोलो आप कौन ? वाई हम तो साधु है। साधु तो दो-एक शीलवंत, दूजा संतोषी, इसमेंसे कौन ? भाई सच्च बोलो आप कौन ? वाई हम तो निर्मल है। निर्मल तो दो एक साधु, दूजा पानी, इसमेंसे कौन ? भाई सच्च बोलो आप कौन ? वाई हम तो परदेशी है। परदेशी तो दो—एक जीव, दूजा पवन, इसमेंसे कौन ? भाई सच्च बोलो आप कौन ? वाई हम तो गरीब है। गरीब तो दो—एक बकरी रो जायो, दूजो मंगतो, इसमेंसे कौन ?। भाई सच बोलो आप कोन ? वाई हम तो सफेद है। सफेद तो दो-एक बैल, दूजा कपास इसमेंसे कौन ? भाई सच्च बोलो आप कौन ? वाई हम तो चतुर है। चतुर तो दो-एक अन्न

दूजो जल, इसमेंसे कौन ?। भाई सच बोलो आप कौन ? बाइ हम तो हार्या। हार्या तो दो एक बेटीका बाप, दूजा करजदार, इसमेंसे कौन ?। अब डोकरी कहने लगी आप तो राजा भोज है, और यह माघ पंडित है। इतनी बात चित करके डोकरीको नमस्कार करके, असवार होकर अपने शहर आये।

॥ इति डोकरीकी बात ॥

—:*:—

॥ जीवदयापर दामन्नककी कथा ॥

(सिंदूर प्रकरणसे उद्धृत)

इस भारतक्षेत्रके गजपुर नगरमें सुनंद नामका एक कुलपुत्र रहता था, उस ही नगर में धर्मवन्त जिनदास भी रहता था। इन दोनोंकी परस्पर बहुत प्रीति थी, एक दिन वह

दोनों मित्र वनमें गये, वहां बृहस्पति समान धर्माचार्यको देखकर नमस्कार किया। आचार्य ने दया मूल धर्मका उपदेश दिया, वह सुण-कर सुनंद गुरुको कहने लगा कि मैं मांसभक्ष-णका पच्चक्खाण तो कर देउं, मगर मेरेसे मेरा कुलका आचार कैसे छोड़ा जाय? गुरुने कहा धर्मका आचार ही सच्चा समझना, धर्मके समय कोई भी आलंबन नहीं करना। ऐसा सु-णकर सुनंदने तुरत हो जीवदयाव्रत स्वीकार किया, मांसभक्षणका नियम लिया। सब जी-वोंको अपनी आत्मा तुल्य मानता हुआ सुखसे व्रत पालने लगा। ऐसे करते करते बहुत काल चला गया। एक समय बड़ा दुष्काल पड़ा, तब सब जगह अनाज तेज हो जानेसे पूरा भोजन मिलने नहीं लगा, ऐसा समय देखकर सुनंद की स्त्री कहने लगी कि हे स्वामिनाथ? अपना कुटुंबका पालन करनेके लिये मच्छी पकड़ कर ले

आओ तव सुनंदने कहा कि हे पापिणी ? मेरे आगे ऐसी वात करनी नहीं, चाहे जैसा कष्ट प्राप्त होगा, तो भी मैं हिंसा करूंगा नहीं तव स्त्री ने कहा कि तूं वड़ा निर्दय है कुटुम्वको दुःखी करनेसे लोक में अपयशः होगा। ऐसा कह कर उसका साला जवरजस्ती से उसको मच्छी पकड़नके लिये ले गया। वहां जाकर पाणी में जाल डाला, उसमें जो मच्छी आई वह सव अपना व्रत पालनेके लिये वापीस पाणी में छोड़ दी, घर पर खाली हाथ से आया। फिर दूसरे दिन स्त्रीकी प्रेरणासे गया, उस दिन भी वैसे ही मच्छी वापीस पाणी में रख कर खाली हाथे घर पर आया। फिर तीसरे दिन स्त्रीको प्रेरणासे गया, वहां मच्छो पकड़ते एक मच्छी की पांख टूट गई, यह देख कर वड़ा दुःखीत होकर पश्चाताप करने लगा, पीछै सगां सम्बधियोंको कह कर अनशन किया और मरण पा कर, राजगृही

नगरीमें नरवर्मा राजा राज्य करते हैं वहां मणि-
यार नामका सेठ की सुयशा नामा स्त्री की कूख
में आकर पुत्र पणे उत्पन्न हुआ, उसका दाम-
न्नक ऐसा नाम रक्खा। वह आठ वर्षका हूआ,
तब सेठके घर महामारी रोगका उपद्रव हुआ,
इससे घरके सब जने मरण पा गए, आयुष
योगसे एक दामन्नक ही जीता रह गया, और
राजाने उसके घर पर पोलास बैठा दी। दाम-
न्नक चुधातुर होता हुआ घर घर भीख मांगने
लगा। एक दिन सागर सेठ नामका व्यवहा-
रीयाके वहां भिक्षा मांगने गया, उस समय वह
व्यवहारीयाके घर पर साधु आहार वहेरनेको
आये थे, उसमें से एक बड़े साधुने सामुद्रिक
लक्षणसे देखकर "यह भिखारी इस सेठके
घरका मालिक होगा" ऐसी वाणी बोला। वह
सागर सेठने दीवालके आंतरे रहकर सूनली
इससे बड़ा दुखित होकर विचार करने लगा

कि क्या यह भीखारी मेरा घरका मालिक होगा? अब उसको मैं कोई उपाय करके मराय डालूं, जिससे मेरी लक्ष्मी मेरा पुत्र पौत्रादिक भोगवे। ऐसा विचार कर कोई चांडालको वहुत द्रव्य देना स्वीकार कर कहा कि इस दामन्नकको मार डालना।

वह चंडाल दामन्नकको लड्डू की लालच बतलाकर जंगलमें ले गया, वहां उस गरीब बालक को देखकर चंडाल मनमें विचारने लगा कि अरे? इस बालकने सेठका क्या अपराध किया होगा? जिससे सेठने मुझको मारनेकी आज्ञा दी। अहा! मेरा जैसा बड़ा दुष्ट पापी कौन होगा? कि द्रव्यकी लालचसे यह छोटा बालक को मारनेका स्वीकार करे! तो, यह काम करना मेरेको योग्य नहीं है, ऐसा निश्चय विचारकर बालक को कहा कि हे मूर्ख? तूं यहांसे भग जा जो तूं यहां रहेगा तो तुझको

सागर सेठ मार डालेगा ! ऐसा भय देखाया, जिससे दामन्नक भग गया । कहा है कि संसार में जीवन सबको प्रिय लगता है । चांडालने दामन्नककी आंगली काटकर नीसानी लेजाकर सेठको बतला दी। दामन्नक भी लोहीसे भरती हुई आंगली, वहांसे भगता हुआ सागरसेठके ही गोकुलमें गया । कर्म योगे वहां नंद गोकुलपति अपुत्रीया था, उसने अपने घर पुत्र समान रक्खा । दामन्नक वहां आनंदसे रहता हुआ यौवनावस्थामें आया और शूर-वीर हुआ ।

एक दिन वह सागर सेठ अपना गोकुलमें आया वहां दामन्नकको देखकर नंदगोकुलीयाको पूछने लगा कि यह कौन है ? वह जीतना वृतांत दामन्नकका जानता था सो कह दिया । यह सुनकर सेठ विचारने लगा कि कदाच साधुका वचन मिथ्या न हो ? एसा विचार कर

जैसा आया वैसा ही घर तर्फ जाने लगा, तब नंद गोकुल बोला कि आप इतना जल्दी वापीस कैसे जाते है ? सेठ ने कहा कि घरपर कार्य है। फिर नन्दगोकुलने कहा कि मेरा पुत्र को घर भेजो, वह आपका कार्य कर आजायगा, ऐसा सुनकर सेठने कागज लिख दामन्नकको दिया और कहा कियह कागज मेरा पुत्रको ही देना। दामन्नक कागज लेकर वहांसे चला, रास्तामें थक जानेसे गामके नजदिक कामदेवका मंदिरमें जाकर सो गया, उस समय सागर सेठकी ही विषा नामकी कन्या उसी हि कामदेवकी पूजा करनेको आई, उसने दामन्नकको निन्द लेता हुआ देखा, और अंगरखीकी कससे बंधा हुआ एक कागज देखा, वह खोलकर वांचने लगी, उसमें "स्वस्ति श्री गोकुलात् समुद्रदत्त योग्य सानंदं लिख्यते इस दामन्नकको आते ही शीघ्र विष देना, इसमें कुछ भी विचार करना

नहीं" ऐसा कागज बांचकर कन्याने विचार किया कि मेरा पिता कागज लिखते एक काना भूल गया है, जिससे 'विपा' मेरा नाम है उस स्थान पर 'विप' देना ऐसा भूलसे लिखा गया है। ऐसा विचार कर आंखका काजल काढ सलीसे काना देकर विपके स्थानपर विपा लिख दिया, और कागज वापीस उसकी कसमें बांध कर कन्या अपने घर आई।

अब दामन्नक उठकर शहर तर्फ चलत चलता अनुक्रमसे सेठके घर पर आया और सेठके पुत्रको कागज दिया। उसने कागज बांचकर उसी समय बड़ा महोत्सव पूर्वक अपनी बहिन विपा उसको परणा दी। कितनेक दिनके बाद सागर सेठ भी गोकुलसे घर आया, तब यह बात सुनकर मनमें बड़ा दुःखी होकर विचार करने लगा कि मैंने क्या विचारा था और यहां क्या हुआ! अरे! मैंने लाभके

लिये मूल भी खो दिया। तो भी अबी कुछ उपाय तो करूं कि वह दुःख पावें, ऐसा विचार कर सेठ फिर भी चांडालके घर जाकर कहने लगा कि अरे पापी चांडाल ? यह तेंने क्या किया ? जो दामन्नकको जीवता छोड़ा। अस्तु, अबी भी जो मेरा इतना काम करे तो जीतना द्रव्य तं मांग इतना मैं देउंगा। तब चांडाल बोला कि हे स्वामी ? आप कहो उसको मार कर आपकी इच्छा पूर्ण करुं। तब सेठने संकेत किया कि संध्याके समय में जिसको देवीके मंदिर भेजुं, उसको मार डालना, ऐसा कहकर अपने घरपर आ सेठ कहने लगा कि अरे मूर्खो ? अबी तक तुमने देवीकी पूजा नहीं की ? सब काम तो देवी पूजन करने बाद ही होता है, यह कहकर पुष्पादि पूजन की सामग्री देकर देवी पूजनके लिये संध्या समय अपना जमाईको भेजा। उसको जाते वक्त

रास्तामें उसका साला मिला, उसने अपना बहनोईको वहां खड़ा रख कर बोला कि यह काम मैं कर आउंगा ऐसा कह कर स्वयं पूजन की सामग्री लेकर देवी पूजनको चला, वह जैसा मंदिरमें प्रवेश करते है इतनेमें तो उस चांडालने तरवारसे मार डाला। उस समय बड़ा कोलाहल हुआ कि यह सेठका पुत्र मारा गया। यह बात सुनकर सेठ जाकर देखते है तो अपना ही पुत्रको देखा उससे बड़ा दुखी होकर विलाप करने लगा, और पुत्रका दुःखसे दुःखी होकर मर गया। पीछे राजाका आदेशसे दामन्नक सेठके घरका मालिक बना और पूर्वकृत पुण्यसे बड़ा लक्ष्मीवाला हुआ, सात पुण्य क्षेत्रमें धन खर्च करता हुआ, त्रिवर्ग (धर्म अर्थ, काम) को साधन करता हुआ सुख पूर्वक रहने लगा।

एक दिन कोई एक भाटने आ कर दाम-

न्नकके आगे एक गाथा बोला, वह इस मुजब "तस्स न हवइ दुक्खं, कयावि जस्सत्थि निम्मलं पुरणं। अरणघरत्थं दघं, भुंजइ अरणो जणो जेण" ।१॥ भावार्थ—"जिसका अच्छा निर्मल पुन्य है उसको कुछ भी दुःख होता नहीं है, और दूसरे घरकी लक्ष्मीको भी भोगवते हैं' इत्यादि यह गाथा सुनकर दामन्नकने उस भाटको तीन लाख द्रव्य दिया, वह देखकर लोकोंमें बड़ी ईर्षा हुई, तब राजाने उसको बोलाय कर पूछा कि इतना बड़ा दान तेंने क्यों दिया ? तब राजा आगे अपनी सब बातकी उत्पत्ति थी सो कह दी। वह सुनकर राजाने दामन्नकको नगर सेठ बनाया, अनुक्रममे दामन्नक अच्छी तरह दयाधर्म आराधन कर देवलोकमें गया।

इस मुआफिक हे भव्य जनो ? दया धर्मका बड़ा महत्व देखकर दामन्नककी तरह दया

दान दो जिससे सुखश्रेयः पावो ॥

इति जीवदयापर दामभककी कथा।

अथ ज्ञान–चोपड़ लिख्यते।

(राग सोरठा)

अरे म्हारा प्राणीया चतुरनर, इनविधि चोपड खेल रे ॥ अरे० ॥ ए टेक॥ अशुभ करम मल झाड़के चतुरनर, जाजम कर वैराग रे। बड़ीय बिछायत वैठज्यो चतुरनर, जठे नहीं कुमतको लाग रे ॥ अरे० ॥ १ ॥ दान शील तप भावना चतुरनड, चोपड एह पसार रे। आठ दाव इक बोलमें चतुरनर, आठुं करम निवार रे॥ अरे० ॥ २ ॥ देवगुरु शास्त्र तीनूं भला चतुरनर, पाशा एही जाणरे। अवसर कर हाथे लिया चतुरनर, उज्वल लेश्या आंण रे ॥

अरे० ॥ ३ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र भला चतुनर, तीनूं गुपति विचार रे। सात तत्व हिरदे धरो चतुरनर, ए सब सोला सार रे ॥ अरे० ॥ ४ ॥ पड्या अठारे रहण दे चतुरनर, पोवारा व्रत धार रे। दश लक्षण दश धर्म है चतुरनर, हितकर हिये विचार रे ॥ अरे० ॥ ५ ॥ षट्-काया छकड़ी पड़ी चतुरनर, हिरदे दया विचार रे। पुन्य उदय पंजड़ी पड़ी चतुरनर, पंच-महाव्रत धार रे ॥ ६ ॥ च्यार तीन काणा पड्यां चतुरनर, सातुं व्यसन निवार रे। जे दुरगति दायक सही चतुरनर, वधे अनंत संसार रे ॥ अरे० ॥ ७ ॥ चौहुं गति वाजी लग रही चतुरनर, दुख सह्यां भरपुर रे। करम कटे सुख उपजे चतुरनर, रतन सागर कहै सुर रे ॥ अरे म्हारा प्राणीया० ॥८॥

॥ इति ज्ञान—चोपड़ समाप्तम् ॥

—०—

॥ अथ ज्ञान–सराफी लिख्यते ॥

साधो भाई अब हम कीनी ज्ञान सराफी, जगमें प्रगट कहाये ॥ साधो० ॥ भव अनेक गये सब तजके, उत्तम कुलमें आये ॥ साधो० ॥ १ ॥ समकित हाट करी अतिनीकी, समता टाट बिछायो । क्षमा गद्दी चढकर बैठे, तकिया शील लगाया ॥ साधो० ॥ २ ॥ तप मुनीम बैठे अति उत्तम, संजम पारख राख्या धीरज विप्र तगादे भेज्या, सत्त दलाल ज्यु भाष्यो ॥ साधो० ॥ ३ ॥ शुद्ध भाव कीनी बट-वारी, कांटा शुभ रुच धारा॥द्रढ वैराग्यका किया तोला, पाप तोला किया न्यारा ॥ साधो० ॥ ४ ॥ श्रीभजन किया रुजनामा, करुणा वही बनाई । जिनवर भक्तिकी रोकड़ राखी, धर्म ध्यान बद-लाई ॥ साधो० ॥५॥ गुरु उपदेशका किया अडेवा

दीसै जमा सवाई। सेठू ऐसा, विणज करत है, मुक्ति महानिधि पाई ॥ साधो० ॥ ६ ॥

॥ इति ज्ञान—सराफी समाप्तम् ॥

॥ अथ सुहित शिक्षा ढाल लिख्यते ॥

(लुम्बारी डोरी एदेशी)

मीठी अमृत सारखी, सत्पुरुषारी वाणी। सुणता हो जय जय कार, वारी हो हित शिक्षा वडांरी ॥ १ ॥ क्रोधादिकषाय तजो, सत्पुरुषारी वाणी। तजो वलि विषय विकार, वारी हो हित शिक्षा वडांरी ॥ संगत करो विद्वान री, सत्पुरुषांरी वाणी। भली हो शीख हिये धार, वारी हो हित शिक्षा वडांरी ॥ ३ ॥ पांचो इन्द्रिय वश करो, सत्पुरुषारी वाणी। तजो वलि कुव्यसन सात, वारी हो हित शिक्षा वडांरी ॥ ४ ॥

गुरु दीपक गुरु देवता, गुरु विना घोर अंधार।
जे गुरुवाणी न सुणे, रडवडीया संसार ॥ ४ ॥
रे जीव ? पाप न कीजिये, अलग रहीये आप।
जे करसे ते पामसे, कौन बेटा कौन बाप ॥ ५॥
जाण्या तो उसने सच्चा, मोहमें न लेपाय।
सुख दुःख आवे जीवने, हर्ष शोच नहीं थाय ॥६॥
चिन्तासे चतुराई घटे, घटे रूप गुण ज्ञान।
चिन्ता बड़ी अभागणी, चिन्ता चिता समान ।७।
देवगुरु दोनु खड़ा, किसकु लागु पाय।
बलिहारि मेरा गुरु तणी, देव दिया ओलखाय ।८।
दुःखमें प्रभुको भजे, सुखमें भजे न कोय।
जो सुखमें प्रभुको भजे, तो दुख कहांसे होय ॥६॥
साधु सबसे सुखीया, दुःख नहीं लवलेश।
आठ कर्मको जीतवा, पहेर्यो साधुनो वेश ॥१०॥
स्वामीका सगपण समो, पगपण और नहीं कोय
भक्ति करो स्वामी तणी, समकित निर्मल होय।११।
पांचुं इन्द्रिय वश करे, पाले पञ्च आचार।

उठ कबीर ? उद्यम करे, बैठे देगा कौन ।
उद्यमके शीर लच्छमी, ज्यु पंखेसे पौन ॥ २१॥
जिहां संवर तिहां निर्जरा, जहां आश्रव तिहां बंध
ऐसी बात विवेककी, अवर सब है धंध ॥ २२ ॥
क्षमा सार चंदन रसे, सींचो चित्त पवित्र ।
दया वेल मंडप तले, रहो लहो सुख मित्र ॥२३॥
जब जिसके पुण्यका, पहोंचे नहीं करार ।
तब लग उसको माफ है, अवगुन करे हजार ।२४।

मूर्ख क्या करे (छप्पय छंद)

बुद्धि विन करे वेपार, दृष्टि विन नाव चलावे ।
सुर विन गावे गीत, गर्थ विण नाच नचावे ।
मति विन जाय विदेश, गुण विन चतुर कहावे
सूर विन करता युद्ध, होंस विन हेत जणावे ।
अन इच्छा इच्छा करे, अण दीठी वातो कहे ।
वैताल कहे सुण विक्रम, ओ मूरखकी जात है ।

पांच सुमते सुमता रहे, वांदु तेह अणगार।१२।
स्त्री पीयर नर सासरे, संजमवान थिर वास।
ए लागे अलखामणा, जो रहे थिर वास॥ १३॥
वहेतां पाणी निर्मला, पड़ा गन्धिला होय।
साधु विचरता भला, दाघ न लागे कोय॥ १४॥
लोभे लाज घटे घणी, लोभे प्रभू प्रतिकूल।
लोभे लच्छण जाय छे, लोभ पाप नु मूल॥१५॥
अशुभ कर्मके हरण कुं, मंत्र वड़ो नवकार।
वाणी द्वादश अंगसे, शुद्ध लेओ तत्वसार॥१४॥
चलते थे प्रभु मिलन कुं, बीचमें घेर्यो आण।
एक कञ्चन दूजी कामिनी, कैसे होय कल्याण।१७
चलनो भलो न कोशको, बेटी भली न एक।
देणो भलो न सगा बापको, जो राखे प्रभु टेक।१८।
मनुष्य जाणे में करूं, पिण करता दूजा कोय।
शरू किया पड़ा रहे, कर्म करे सो होय॥ १६॥
शामल! वो नर मूढ़ है, घीसे चामसे चाम।
साचा कामी सो ही ये, करे आतमहित काम।१८।

उठ कबीर ? उद्यम करे, बैठे देगा कौन ।
उद्यमके शीर लच्छमी, ज्यु पंखेसे पौन ॥ २१॥
जिहां संवर तिहां निर्जरा, जहां आश्रव तिहां बंध
ऐसी बात विवेककी, अवर सब है धंध ॥ २२ ॥
क्षमा सार चंदन रसे, सींचो चित्त पवित्र ।
दया वेल मंडप तले, रहो लहो सुख मित्र ॥२३॥
जब जिसके पुण्यका, पहोंचे नहीं करार ।
तब लग उसको माफ है, अवगुन करे हजार ।२४।

—०—

मूर्ख क्या करे (छप्पय छंद)

बुद्धि विन करे वेपार, दृष्टि विन नाव चलावे ।
सुर विन गावे गीत, गर्थ विण नाच नचावे ।
मति विन जाय विदेश, गुण विन चतुर कहावे
सूर विन करता युद्ध, हौंस विन हेत बतावे ।
अन इच्छा इच्छा करे, अण दीठी बातें कहे ।
वैताल कहे सुण विक्रम, ओ मूरख जाते है ।

बुरा क्या?

बुरो प्रीतको पंथ, बुरो जङ्गलको वासो।
बुरो कुमित्र स्नेह, बुरो मूरखको हांसो।
बुरी सूमकी सेव, बुरो भगिनी घेर भाई।
बुरी नार कुलच्छणी, सासु घर बूरो जवाई।
अति बुरी पेटकी भूख है, बुरा मुहूर्त्तमें भागना
करीने सुविचार सुकवि कहे, सबसे बुरो मांगनो

लौकिक कहानी।

केसर तो कास्मीर री, मोतीतो वसरा (समुद्र) का,
मेवो काबूल रो, चम्पो तो आबु को,
लोवडो तो जेसलमेररी, पांख तो मोररी,
मिश्री तो बीकानेर री, अंतरदान ढाके रो,
कारिगिरी चीनरी, दूध तो गौरो,
गुदडी कीशनगढ़ री, सालजोड़ो कास्मीर रो,
गलीचा मीरजापुररा, फूल तो गुलाबरा,
गढ़तो चीतोड़ रो, रङ्ग तो मजीठरो,

पान तो नागर वेलरा, काष्ट तो चंदण,
फल तो नारियेलरा, विद्या तोकाशीरो,
जीमणो तो मातारे हाथरो, रमत तो वालकरी,
हुकुम हाकमरो, घरतो लुगायरो,
आंख तो मृगरो, गर्जना तो मेघरी,
चाल तो हाथी री, मीठी वोली गुजरातरी,
ऊंची वोली भवरीरो, वड़ी वोली उदयपुररी,
रूप तो काश्मीर को, राग तो सारंग,
सावण व्हार कासमीररी,
अप्रेल-मई व्हार दार्जलिंग री,
पुछा पुछी परवतसररी, वात वीगत शिरोहीरी,
दोड़ा दोडो मसुदारो, लपराई भोजा वादरी,
चुंप सोजतरी, भाई चारो जालोरको,
धंगा मस्ती कोहेरी, टोरो तो भाग्य रो,
जाणो तो आदर रो, हेत तो मातारो,
मरण परभातरी, जन्म रातरो, स्त्री तो पद्मणी,
लेखो चोखो माजन रो, आंट साहुकार री,
भय तो मरण रो, मस्करी तो सालाकी,

बुरा क्या ?

बुरो प्रीतको पंथ, बुरो जङ्गलको वासो ।
बुरो कुमित्र स्नेह, बुरो मूरखको हांसो ।
बुरी सूमकी सेव, बुरो भगिनी घेर भाई ।
बुरी नार कुलच्छणी, सासु घर बूरो जवाई ।
अति बुरी पेटकी भूख है, बुरा मुहूर्त्तमें भागनो
करीने सुविचार सुकवि कहे, सबसे बुरो मांगनो

लौकिक कहानी ।

केसर तो कास्मीर री, मोतीतो वसरा (समुद्र) का,
मेवो कावूल रो, चम्पो तो आबु को,
लोवडी तो जेसलमेररी, पांख तो मोररी,
मिश्री तो बीकानेर री, अंतरदान ढाके रो,
कारिगिरी चीनरी, दूध तो गौरो,
गुदडी कीशनगढ री, सालजोड़ो काश्मीर रो,
गलीचा मीरजापुररा, फूल तो गुलाबरा,
रङ्ग तो मजीठरो,

पान तो नागर बेलरा, काष्ट तो चंदण,
फल तो नारियेलरा, विद्या तोकाशीरी,
जीमणो तो मातारे हाथरो, रमत तो बालकरी,
हुकम हाकमरो, घरतो लुगाय्रो,
आंख तो मृगरो, गर्जना तो मेघरी,
चाल तो हाथी री, मीठी बोली गुजरातरी,
ऊंची बोली झवरीरो, बड़ी बोली उदयपुररी,
रूप तो काश्मीर को, राग तो सारंग,
सावण व्हार कास्मीररी,
अप्रैल-मई व्हार दार्जलिंग री,
पुछा पुछी परवतसररी, वात वोगत शिरोहीरी,
दोडा दोडी मसुदारो, लपराई भोजा वादरी,
चुंप सोजतरी, भाई चारो जालोरको,
धणा मस्तो कोहेरी, टोरो तो भाग्य री,
जाणो तो आदर रो, हेत तो मातारो,
मरण परभातरो, जन्म रातरो, स्त्री तो पद्मणी,
लेखो चोखो माजन रो, आंट साहुकार री,
भय तो मरण रो, मस्करी तो सालाकी,

लाज तो सूसरा की, सुख तो सासरे,
राज तो पोपा बाई रो।

मिथ्यात्वी वर्णन लावणी।

काल अनादिकी भूलसे प्राणी, मत ममतमें ताता है। कंकर कुं शंकर करी माने, ए कुमति की वाता है॥ १॥ आक धतूरा वेल पात सुं, पूजत शिव रंगराता है। अंगदान देता शिव-मतिमें, नरनारीका नाता है॥ २॥ चंडी जीवका गला कटावे, लोक कहे ए माता है। ताकुं पूज मगन मनमोहन, सो नर नरके जाता है॥ ३॥ कुगुरुसुं पर भव दुःख पामे, नहीं तिल-भर एक शाता है। कुदेव कुं चेतन युं सेवत, हिंसा धर्म दुःखदाता है॥ ४॥ कुगुरु त्याग सुगुरु निज सेवे, नित्य निग्रन्थ गुण गाता है। जिनवर गुण जिनदास वखाने, ए मुक्तिका खाता है॥ ५॥

॥ इति मिथ्यात्वी वर्णन लावणी समाप्तम्॥

श्री मच्चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः ।

॥ दोहा ॥

केवलज्ञानी को सदा, वंदु बेकर जोड़ ।
गुरु मुखसे धारण करो, अपनी मोदको छोड़ ।१।
जिन वचन तहमेव सत्य, समभाव नहीं ताण ।
जतनासुं वांचो सही, एह प्रभुकी वाण ॥ २ ॥
पोथी जतने राखजो, तेल अग्निसूं दूर ।
मूर्ख हाथ मत दीजिये, जोखम खाय जरूर ॥३॥
भणजो गुणजो वांचजो, हितकर दीजो दान ।
पोथी द्यो सुविनीतको, ज्युं पावो सन्मान ॥ ४ ॥